मेरे बापू इतने कितने अपने बापू!

-रमेश थानवी

बापू मुझे बरसों से अपने लगते हैं। जब दस बरस का था तब बापू की छाया मुझ पर पड़ गई थी। कारण मेरा परिवार। पिता की कृपा थी, भाई का स्नेह था और घर में बिखरी किताबों का प्रभाव था। तो मैं कह सकता हूं कि मैं बापू की छाया में पला–बड़ा हुआ। मैं सचमुच तो ऐसा नहीं कह सकता, क्योंकि मैंने बापू के दर्शन कभी नहीं किये। जैसे–जैसे बड़ा हुआ मैं गांधी साहित्य का अध्ययन करता रहा। पहले तो बच्चों के लिये लिखी गई उनके जीवन की कहानियां पढ़ीं और बाद में गांधी साहित्य का अध्ययन किया। फिर यह मेरा सौभाग्य था कि मैं ऐसे कई लोगों से मिला जो बापू के साथ रहे थे।

सबसे पहले मैं गुजरात के विश्वविख्यात साहित्यकार और गुजरात विश्वविद्यालय के कुलपति भाई उमाशंकर जोशी से मिला। वे अपने सरल, सौम्य और उदार स्वभाव के कारण मुझे अपना नौजवान दोस्त कहने लगे। भाई उमाशंकर जोशी ने मुझे कई प्रसंग सुनाये, जिनमें बापू साक्षात् सामने खड़े दिखे। मुझे लगता था कि मैं उनके साथ बापू के जीवन में अवगाहन कर रहा हूं। उनके बाद मुझे गुजरात के एक वयोवृद्ध गांधीवादी चिमनभाई पटेल मिले। चिमनभाई की सादगी ने मुझे मोह लिया था। चिमनभाई ने भी बापू के साथ के कई प्रसंग सुनाए

उसके बाद मेरा संपर्क काशीनाथ त्रिवेदी से हुआ जो भारत के आजाद होने के बाद मध्यप्रदेश के पहले शिक्षामंत्री बने। काशीनाथ जी के साथ लम्बा सम्पर्क रहा। बापू के साथ जीने के कई प्रसंग उनसे सुनने को मिले। उमाशंकर भाई की किताब 'गांधीकथा' जब छप रही थी तो काका कालेलकर से भी मिलना हुआ। फिर जीवन के अगले दौर में नारायण भाई देसाई से मिलना हुआ। नारायण भाई गांधीजी के निजी सचिव एवं पुत्र से भी ज्यादा सगे सहयोगी महादेव देसाई के बेटे थे। नारायण भाई से मिलकर गांधीजी के जीवन की कई घटनाओं का पता चला। फिर उनके द्वारा कही जाने वाली गांधी कथा को भी सुनने का अवसर मिला। पहले गांधी कथा गुजराती में सुनी और फिर हिन्दी में सुनी। बापू को करीब से जानने की मेरी जिज्ञासा मुझे आकाशवाणी के संग्रहालय में भी ले गई। वहां मैंने बापू की अपनी वाणी में उन सब प्रार्थना सभाओं के प्रवचन सुने जो आकाशवाणी के संग्रहालय में सुरक्षित हैं। बापू से बिना मिले उनके प्रवचन सुनना एक बहुत दिव्य अनुभव था। इस प्रकार मैं बापू के जीवन के करीब आता गया और मुझे लगता गया कि बापू मेरे अपने हैं।

बापू को केवल अपने अध्ययन के मार्फत जानते हुए मैंने कोशिश शुरू की कि मैं वैसा ही जीवन जीऊं। बारह–तेरह वर्ष की उम्र में चरखा कातने लगा और रोज कातने का अभ्यास करते–करते बयालीस नंबर तक का सूत कातने लगा। विनोबा का गीता प्रवचन तेरह वर्ष की उम्र में पढ़ डाला। जब भी जैसा भी अवसर मिलता बापू के जीवन संबंधी दूसरी किताबें भी पढ़ने लगा। उनका सारा जीवन मेरे लिये प्रेरणादायक था और लगातार मुझको अपना बनाता रहा।